एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 10 (अक्टूबर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

मधुमक्खी पालन एवं प्रबन्धन

*डॉ. महेन्द्र बेले एवं सुनिल सिलावट
सहायक प्राध्यापक (कृषि संकाय), जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mahendrabeleentomology@gmail.com

देश मे कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकार किसानो के लिए कई योजनाएं संचालित कर रही है । इन योलनाओं से किसानो को फायदा हो रहा है । इन योजनाओ को चलाने का सरकार का मुख्य उददेश्य देश के कुल उत्पादन को बढाने के साथ ही किसानो की आमदनी मे बढोतरी करना है । खेती बडी के अलावा किसानों को और अधिक लाभ कैसे मिल सके इसके लिए सरकार ने मधुमक्खी पालन की योजना चला रखी है । किसान खेतीबाडी के साथ ही मधुमक्खी पालन कर अपनी अमदानी में बढोतरी कर सकता है ।

इस वर्ष सरकार द्वारा मधुमक्खी को बढावा देने के आत्मनिर्भर भारत के तहत 500 करोढ रूपए देने का प्रावधान किया गया है । मधुमक्खी पालन से ग्रामीण क्षेत्रो में जहां रोजगार का साधन प्राप्त होता है वही परागण के माध्यम से फसलो से होने वाली आय और गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है साथ ही मधुमक्खी पालन से शहद और मोम जैसे उत्पादन भी प्राप्त होते है । मधुमक्खी पालन किसानो के लिए अनुकूल व्यवसाय के रूप में सही है । यह किसानो का कृषि में सहायक होने साथ ही आमदनी का एक जरिया भी है ।

लेकिन किसानो को सही जानकारी नही रहने के कारण इसकी व्यवसाय में अधिक रूचि नही लेते है । इसको ध्यान मे रखते हुए उत्तर प्रदेश में मधुमक्खी पालन के लिए 3 माह का प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है । यह आयोजन मधुमक्खी पालन के साथ ही इस क्षेत्र में रोजगार की भी प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है । यह आयोजन मधुमक्खी पालन के साथ ही इस क्षेत्र में रोजगार की भी प्रशिक्षण दिया जाएगा ।

मधुमक्खियां मोन समुदाय में रहने वाली कीटो वर्ग की जंगली जीव है इन्हे उनकी आदतो के अनुकूल कृत्रिम ग्रह हईव मे पाल कर उनकी वृद्धि करने तथा शहद एवं मोम आदि प्राप्त करने को मधुमक्खी पालन या मौन पालन कहते है । शहद एवं मोम के अतिरिक्त अन्य पदार्थ जैसे गोंद प्रोपोलिस रायल जेली डंक विष भी प्राप्त होते है ।

मधुमक्खी पालन का उपयुक्त समय

वैसे तो मधुक्खी पालन पूरे बारहों महीने किया जा सकता है लेकिन मधुमक्खी पालन के लिए जनवरी से मार्च का समय सबसे उपयुक्त रहता है वही नवंबर से फरवरी का समय तो इस व्यवसाय के लिए कॉफी फायदेमंद है ।

डॉ. महेन्द्र बेले

मधुमक्खी पालन कैसे करे / मधुमक्खी पालन का समय

पृथ्वी पर लगभग 20000 से अधिक प्रकार की मधुक्खियां है जिनमें से केवल चार प्रकार की ही शहद पाती है आमतौर पर मधूमक्खी के छत्ते में एक रानी मक्खी कई हजार श्रमिक मक्खी और कुछ नर मधुमक्खी होते है । मधुमक्खियो का समूह श्रम विभाजन और विभन्न कार्यो के लिए विशेषज्ञो का उत्तम उदाहरण होता है । मधुमक्खी श्रमिक मधुक्खियो की मोम ग्रथि से निकलने वाले मोम से अपना घोसला बनाते हे जिन्हे शहद का छत्ता कहा जाता है । देश में चार प्रकार की मधुमक्खियो की प्रजाति पाई जाती हे जिसमें यूरोपियन इटेलियम बी है इसका मधुमक्खी पालन काफी आसानी से पाल सकते है । क्योकि वह शांत स्वभाव की होती है और एक परिवार की तरह उनकी सरचना होती है उस हिसाब से वह काम करती है ।

इन मधुमक्खियो का अंधेरे में छत्ता होता है और सामांतर छत्ते यह लगाती है । किसानो की आय बढाने करने के लिए और मधूमक्खी पालन को बढावा देने के लिए देश के कई संस्थान इस व्यवसाय की ओर ध्यान दे रहे है । किसी मान्यता प्राप्त से संस्थान से प्रशिक्षण लेकर इस व्यवसाय को शुरू किया जा सकता है ।

शरूआती दौर में पांच कलोनी पांच बाक्स से शुरू कर सकते है एक बॉक्स में चार हजार रूपए का खर्चा आता है तो अगर आप पांच ऐसे बॉक्स लेगें तो बीस हजार रूपए का खर्चा आता है । इनकी सख्या का बढाने के लिए समय सयम पर इनका विभाजन कर सकते है । अगर ठीक से विभाजन से कर लिया तो एक साल में 20000 हजार बक्से तैयार किए जा सकते है ।

मधुमक्खी पालन बॉक्स कितनी प्राइस / मधुमक्खी पालन बॉक्स प्राइस

एक बॉक्स की कीमत चार हजार रूपए है जिसमें मधुमक्खी छत्ता साहित बॉक्सा भी रहता है । किसानो को मधुमक्खी पालन योजना के तहत एक बक्से पर 75 प्रतिशत का अनुदान मिलता है ।

कहां से ले सकते है बॉक्स व मधुमक्खी

दिल्ली में नेषनल बी बार्ड से प्रमाणित संस्थाए है उनसे है उनसे आप मधुमक्खियों को खरीद सकते है । उद्यान विभाग से भी ले सकते है। कृषि विज्ञान केन्द्र से भी मधुमक्खी ले सकते है। इसके अलावा यहां से बाक्स भी प्राप्त किए जा सकते है ।

मधुमक्खी पालन के फायदे

- पुष्पारस व पराग का सदुपयोग आय व स्वरोजगार का सृजन ।
- शुद्ध मधु रायल जेली उत्पादन मोम उत्पादन पराग मौनी विष आदि ।
- 3 बगैर अतिरिक्त खाद बीज सिंचाई एवं शस्य प्रबन्ध के मात्र मधुमक्खी के मौन वंश को फसलों के खेतो व मेंडो पर रखने से कामेरी मधुमक्खी के पर परागण प्रक्रिया से फसल सब्जी एवं फलोद्यान में सवा से डेढ गुना उपज में बढोत्तरी होती है ।
- मधुमक्खी पालन में कम समय कम लागत और कम ढांचागत पुंजी निवेश की जरूरत होती है ।
- कम पउजवाले खेत से भी शहद और मधुमक्खी के मोम का उत्पादन किया जा सकता है ।
- मधुमक्खियां खेती के किसी अन्य उद्यान से कोई ढांचागत प्रतिस्पर्द्धा नहीं करती है ।
- मधुमक्खीयां पालन का पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पडता है । मधुमक्खीयां कई फूलवाले पौधो के परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इस तरह वे सूर्यमुखी और विभिन्न फलो की उत्पादन मात्रा बढाने में सहायक होती है।
- शहद एक स्वादिष्ट और पोषण खाद्य पदार्थ है । शहद एकमात्र करने के पारंपरिक तरीके में मधुमक्खियो के जंगली छत्तें नष्ट कर दिये जाते है । इसे मधुमक्खियो को बक्सों में रख कर और घर में शहद उत्पादन कर रोका जा सकता है ।
- मधुमक्खी पालन किसी एक वक्ति या समूह द्वारा शुरू किया जा सकता है । बाजार में शहद और मोम की भारी मांग है ।

मधुमक्खी से प्राप्त उत्पादो की उपयोगिता

मधुमक्खी उत्पाद जैसे मधु रायलजेली व पराग के सेवन से मानव स्वस्थ एवं निरागिता होता है । मधु का नियमित सेवन करने से तपेदिक अस्थमा कब्जियत खून की कमी रक्तचाप की बीमारी नही होती है । रायल जेली का सेवन करने से टयूमर नही होता है और स्मरण शक्ति व आयु में वृद्धि होती है । मधु मिश्रित पराग का सेवन करने से प्रास्ट्रेटाइटिस की बीमारी नहीं होती है । मौनी विष से गाठिया बताश व कैंसर की दवायी जाती है । थिरैपी से असध्य रोगो का निदान किया जाता है ।

मधुमक्खी पालन से कमाई / मधुमक्खी पालन से आमदनी

मधुमक्खी पालन के उपयोग में आने वाले बाक्स 12 इंच चौडा और 22 इंच लंबा होता है एक बक्से में 10 या उससे कम फ्रेम होती है । कम फ्रेम होने पर शहद कम इक्टठा होता है । एक बाक्स से दो महीनें में 50 से 60 किलो सहद का उत्पादन होता है सहद बेचने पर एक बाक्स पर करीब 3 हजार रूपए का मिलता है । जैसे जैसे बाक्सों की संख्या आप बढाते जांएगे उतना ही आपको अमदनी होगी ।

हाईव